योगिक साहित्य में संस्कृत की भूमिका : एक विश्लेषण

जयराम कुशवाहा

एम. फिल. शोधार्थी, योग

योग एवं आयुर्वेद विभाग

सांची बौद्ध भारतीय ज्ञान-अध्ययन विश्वविद्यालय, बरला, रायसेन, मध्य प्रदेश, भारत

(jairam.patel.146sgr@gmail.com)

.....

संक्षेपिका

प्राचीन साहित्य का अवलोकन करने पर सामान्यत: ज्ञात होता है कि प्राचीन ग्रंथों का आधार पूर्णत: संस्कृत थी। आधुनिक युग में भी प्राचीन ग्रंथों का अध्ययन संस्कृत में ही किया जाता है। संस्कृत भाषा पूर्णत: वैज्ञानिक व आध्यात्मिक है। संस्कृत भाषा के उच्चारण से जो स्पंदन उत्पन्न होते हैं वे संपूर्ण शरीर में होने वाली संवेदनाओं की अनुभूति में सहायक होते हैं। विद्वानो के अनुसार तालु भाग को **'शिव'** और जिव्हा को **'शक्ति'** कहा गया है जब संस्कृत मंत्रो के उच्चारण से तालु अर्थात् शिव और जिव्हा अर्थात् शक्ति का मिलान होता है तो मंत्रो का सकारात्मक प्रभाव व्यक्ति के शारीरिक, मानसिक, सामाजिक और आध्यात्मिक स्तर पर पडता है। सामान्य रूप से देखा भी गया है कि जितने भी वैदिक ग्रंथ हैं उन सभी की मूल भाषा संस्कृत ही रही है। संस्कृत को अत्यंत प्राचीन एवं दैवीय भाषा भी कहा जाता है। योगिक साहित्य में भी जितना प्राचीन साहित्य है वह संपूर्ण मूलता संस्कृत में ही प्राप्त होता है। योगिक ग्रंथों के अंतर्गत मुख्य रूप से देखा जाए तो वेद पुराण उपनिषद योग दर्शन स्मृतियां हठयोग ग्रंथ आदि भी मूलता संस्कृत में ही प्राप्त होते हैं इनकी रचना प्राचीन समय में संस्कृत भाषा में की गई थी। वर्तमान में संस्कृत साहित्य ही ज्ञान का आधार बना हुआ है संस्कृत भाषा भारतीय साहित्य की सबसे पुरातन एवं सर्व प्रमाणित भाषा मानी जाती है संस्कृत भाषा के उच्चारण से जो स्पंदन व संवेदना उत्पन्न होती हैं उनका न केवल शरीर पर प्रभाव पड़ता है, बल्कि मानव मस्तिष्क पर भी सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। अतः कहा जा सकता है कि संस्कृत भाषा के उच्चारण से शारीरिक मानसिक व आध्यात्मिक लाभ प्राप्त किया जा सकता है।

मुख्य शब्द : योगिक, संस्कृत, स्पन्दन, अध्यात्म, हठयोग।

प्रस्तावना :-

संस्कृत साहित्य के बिना भारतीय साहित्य की नीव बिना आधार के मकान के समान प्रतीत होती है। भारतीय साहित्य का आधार संस्कृत भाषा ही मानी जाती है और संस्कृत साहित्य को जगत का आधार माना जाता है। संस्कृत भाषा का विज्ञान स्वत: प्रमाणित है, क्योंकि यह हमारे प्राचीन मनीषियों के द्वारा यर्थात अनुभव और दिव्य साधना के फलस्वरूप उतपन्न वाणी है। संस्कृत भाषा वेदों और उपनिषदों के साथ सभी प्राचीन ग्रंथों की भाषा होने के कारण स्वत: प्रमाणित है। प्राचीन महर्षियों का मानना है कि संस्कृत देवों की वाणी है इसलिए इसे देव भाषा भी कहा जाता है संस्कृत भाषा का काल निर्धारित नहीं किया जा सकता है, क्योंकि इस भाषा का उद्भव वेदों से पूर्व अर्थात् कहा जा सकता है कि सृष्टि उत्पत्ति के साथ ही संस्कृत का विकास हुआ और उस परम सत्ता में वाक् रूप में संस्कृत भाषा पूर्व से ही समाहित थी। कुछ विद्वानों ने संस्कृत भाषा का काल निर्धारण करना चाहा परंतु उनमें अत्यंत मत-भिन्नता देखने को मिलती है, लेकिन इतना अवश्य कहा जा सकता है कि जब गौतम बुध्द और आदि शंकराचार्य के काल में संस्कृत भाषा का महत्व था तो निश्चित ही पूर्व काल में भी संस्कृत की उपयोगिता प्रमाणित होती है। इससे यह बात प्रमाणित होती है कि विद्वान ने संस्कृत भाषा का महत्व समझा भी और अपने साहित्य में उसे प्रस्तुत करने का भी प्रयास किया है अनेक विद्वानों का तो मानना है कि प्राचीन समय में संस्कृति एक मात्र भाषा थी। प्राचीन संस्कृत भाषा अत्यंत क्लिष्ट होने के कारण उसमें सरलीकरण होता गया और इसके परिणाम स्वरूप अन्य भाषाओं का उद्भव व विकास प्रारंभ हो गया।

प्राचीन ग्रंथों से प्रमाणित होता है कि सभी भाषाओं का आधार संस्कृत ही है क्योंकि संस्कृत भाषा का व्याकरण सर्व प्रचलित सबसे अधिक प्रमाणित माना जाता है। विद्वानों के अनुसार वेदों को स्वत: प्रमाणित और सर्वप्रसिध्द माना जाता है, अर्थात् विद्वानों का मत है कि प्राचीन महर्षियों और योगियों वेद वाणी को अपनी तपोनिष्ठ अथवा समाधि की अवस्था में उस परम सत्ता से श्रुति परम्परा के माध्यम से प्राप्त किया था। अतः कहा जा सकता है कि संस्कृत भाषा सबसे प्राचीन भाषाओं में से एक है। जिसका विकास आदि काल से ही हुआ है। आधुनिक समय के विद्वानों का मानना है कि संस्कृत भाषा जितनी आध्यात्मिक है उतनी ही वैज्ञानिक भी है क्योंकि संस्कृत भाषा के

उच्चारण अर्थात् मंत्रों के उच्चारण से शरीर में जो स्पंदन स्वरूपा तरंगें उत्पन्न होती हैं वह अन्य भाषा के बोलने से नहीं होती हैं। संस्कृत भाषा के उच्चारण से उत्पन्न स्पंदन के द्वारा शरीर और मन का संतुलन व समन्वय बना रहता है और शांति की अनुभूति होती है।

अध्ययन की आवश्यकता

एक अच्छे लेखन विषय की उपयोगिता व महत्व को समझने के लिए उससे संबंधित समस्याओं व चुनौतियों पर प्रकाश डालना आवश्यक है। विषय की अनिवार्यता को समझ कर हम विषय के सभी पक्षों को जानकर ही अनुभव जन्य सही निष्कर्ष व एक सकारात्मक चिंतन को विकसित कर सकते हैं और उसकी वास्तविक समस्या के समाधान की खोज करने में सफल रहते हैं।

आध्यात्मिक दृष्टि से भी संस्कृत भाषा का अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान माना जाता है क्योंकि जितने भी प्रसिद्ध मंत्र व श्लोक आदि का जप किया जाता है वह आज भी संस्कृत में ही होता है। इसका मुख्य कारण यह है कि संस्कृत के उच्चारण से शरीर पर ही नहीं अपितु मन पर भी सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। संस्कृत भाषा के उच्चारण या गायन से व्यक्ति का भावनात्मक विकास होता है। इससे मनुष्य मानसिक व भावनात्मक रूप से स्थिति व संतुलित रहता है। विद्वानों ने भाव शरीर का संबंध आध्यात्मिकता से बताया है। योग विज्ञान महत्व स्पष्ट वर्णन मिलता है कि संस्कृत मंत्रों के उच्चारण से व्यक्ति का मनोमय वह विज्ञानमय कोश प्रभावित होता है।

यौगिक साहित्य में संस्कृत का महत्व व उपादेयता :-

प्राचीन मूर्तियों का मानना है कि योग साधना का विकास भी अत्यंत प्राचीन समय से होता आ रहा है। सभी मनुष्यों के लिए उपयोगी आध्यात्मिक साधना है जो शरीर, प्राण, मन व आत्मा के बीच समन्वय स्थापित करती है। यौगिक साहित्य का सिंहावलोकन करने पर स्पष्ट रूप से प्राप्त होता है कि योग विज्ञान के जितने भी प्राचीन ग्रंथ हैं- जैसे योगोपनिषाद्, स्मृतियां, योगदर्शन, व्यास भाष्य, टीकाएं, हठयोग ग्रंथ, योगवशिष्ठ व श्रीमद्भगवत गीता आदि सभी महानतम ग्रंथ मूल संस्कृत भाषा में ही प्राप्त होते हैं। इतना ही नहीं विद्वानो का तो मानना है कि योग की प्रमाणिकता

वेदों, पुराणों, रामायण और महाभारत आदि प्राचीन ग्रंथों में भी वर्णित है, जो सभी मूलत: संस्कृत लिपि में ही प्राप्त होते हैं। इससे संस्कृत भाषा का महत्व और अधिक बढ़ जाता है।

अतः स्पष्ट है कि योगिक साहित्य की संकल्पना संस्कृत भाषा के बिना निराधार प्रतीत होती है। मूल संस्कृत का अध्ययन करने पर ही योग का यथार्थ ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है । संस्कृत का योगदान योग-विज्ञान के लिए वरदान है किसी भी योगाभ्यास से पूर्व मंत्रोच्चारण व प्रार्थना अनिवार्य मानी गई है इससे मन शांत होता है। मंत्रों के उच्चारण से जो चेतना बहिर्मुखी ही रहती है वह आंतरिक जगत की ओर परिवर्तित हो जाती है।

योग के मौलिक ग्रंथों में संस्कृत :-

प्रस्तुत शोध पत्र में योग साहित्य का आधार मूल ग्रंथों का अध्ययन करने पर स्पष्ट प्रतीत होता है कि सभी ग्रंथ मूलत: संस्कृत भाषा में ही प्राप्त होते हैं। इन ग्रंथों का काल अत्यंत प्राचीन माना जाता है। संस्कृत भाषा ही ऋषि-मुनियों की भाषा कहलाती है। कुछ विद्वानों का मानना है कि तालू भाग को **'शिव'** और जिह्वा को **'शक्ति'** कहा जाता है । संस्कृत के मंत्रोच्चारण से जब इन दोनों का संयोग होता है, तो उसके दिव्य अनुनाद व स्पंदन से शारीरिक, मानसिक व आध्यात्मिक लाभ प्राप्त होते हैं। यदि कहा जाए कि योग के मौलिक साहित्य की देन संस्कृत भाषा ही है, तो कोइ अतिसंयोक्ति नहीं होगी।

योग वास्तव में पूर्णतः संस्कृत साहित्य की ही देन है, क्योंकि योग के सभी मौलिक ग्रन्थों की रचना संस्कृत भाषा में ही हुई है। संस्कृत भाषा में योग की व्याख्या करना प्राचीन मनीषियों ने अधिक उचित एवं श्रेष्ठकर समझा है। योग का साहित्य इतना विशाल है कि इसमें मानव जीवन को उत्कर्ष में ले जाने वाला जो भी ज्ञान है वह सब इस साहित्य में सताहित है । योग ज्ञानात्मक पक्ष के साथ उसके क्रियात्मक अर्थात् व्यवहारिक पक्ष को भी साथ लेकर चलता है। योग के साहित्य को उचित ढ़ग से समझने के लिए संस्कृत भाषा का ज्ञान होना आवश्यक है, क्योंकि आज भी योग के विद्वानों ने संस्कृत का जो अनुवाद किया है वह पूर्णतः स्पष्ट प्रतीत नहीं होता है । योग के साहित्य को अनुभव के आधार पर समझना एवं जानना है, तो संस्कृत भाषा का ज्ञान होना अनिवार्य है। संस्कृत की अनीवार्यता न

केवन योग में नहीं है, बल्कि भारतीय सनातन में जितनी भी शिक्षण की शाखायें हैं उन सभी को संस्कृत का ज्ञान होगा तो भारतीय संस्कृति को समझना और भी आसान एवं वैज्ञानिक हो जायेगा।

वैदिक साहित्य :- वेदों की भाषा पूर्णता संस्कृत है और इसमें जो संस्कृत भाषा का प्रयोग हुआ है वह पूर्णता शुद्ध संस्कृत है इसलिए वेदों को सीधे तौर पर समझना कठिन प्रतीत होता है, क्योंकि आज जो वर्तमान में संस्कृत का स्वरूप प्रचलित है उसमें काफी बदलाव आया है। वेदों के मुख्य चार भाग ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद हैं। इनमें से ऋग्वेद में योग अंगो का वर्णन प्रचुर मात्रा में प्राप्त होता है।

उपनिषद :- उपनिषदों की रचना वेदों के अंतिम भाग के रूप में मानी जाती है इसमें भी संस्कृत का ही प्रयोग किया गया है। इनमें जिन उपनिषदों में योग का वर्णन मिलता है उन्हें योगोपनिषद् के नाम से जाना जाता है।

स्मृतियां :- इसमें मुख्य रूप से याज्ञवल्क्य आदि स्मृतियों में भी योग का विस्तृत वर्णन मिलता है जो मूलत: संस्कृत लिपि में ही प्राप्त होती हैं।

पातंजल योग सूत्र :- महर्षि पतंजलि जी को योग का प्रवर्तक माना जाता है, कुछ विद्वानों के अनुसार महर्षि पतंजलि जी व्याकरण शास्त्र के ज्ञाता के रूप में स्वीकार किए जाते हैं। उन्होंने योग के आधार ग्रंथ "पातंजल योगसूत्र" की रचना मूल संस्कृत भाषा में ही की है। पतंजलि योग सूत्र में 195 सूत्र पूर्णत: संस्कृत भाषा में प्राप्त होते हैं। पातंजल योगसूत्र के प्रथम सूत्र में योग के अनुशासन की बात की गई है-

अथ योगानुशासनम। (पातंजल योग सूत्र- 1/1)

हठयोग ग्रंथ :- हठयोग ग्रंथों में मुख्य रूप से हठप्रदीपिका, घेरंड संहिता, शिव संहित, हठरत्नावली, गोरक्ष संहिता, वशिष्ठ संहिता और योग बीज आदि सभी हठयोग ग्रंथों की पांडुलिपि मूल संस्कृत लिपि में ही प्राप्त हुई है। वर्तमान में जो हठयोग के ग्रंथ हैं उनके श्लोक भी संस्कृत भाषा में ही प्राप्त होते हैं। श्लोकों का अनुसंधान के माध्यम से सामान्य जन को प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है।

भगवद् गीता और योग वशिष्ठ :- श्रीमद्भगवद्गीता को योग शास्त्र के नाम से जाना जाता है। मूल ग्रंथ संस्कृत में ही प्राप्त होता है। परंतु आज लगभग सभी भाषाओं में इसका अनुवाद प्राप्त होता है, परंतु फिर भी श्लोक संस्कृत में ही मिलते हैं। योग वशिष्ठ में भी सभी श्लोक संस्कृत में ही वर्णित प्राप्त होते हैं यह एक विशालतम योग ग्रंथ है जिसमें श्रीराम चन्द्र जी और उनके गुरू महर्षि वसिष्ठ के बीच संवाद स्वरूप योग ज्ञान की विस्तार से चर्चा की गइ है।

अत: स्पष्ट है कि संस्कृत भाषा का महत्व योगिक साहित्य में पूर्णत: परिलक्षित होता है वास्तव में योग और संस्कृत दोनों एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। योग विज्ञान के अध्ययन के साथ-साथ संस्कृत भाषा का अध्ययन भी अत्यंत आवश्यक माना गया है। योग के और भी ग्रंथ है जिनमें योग का व्यापक रूप में वर्णन किया गया है।

विमर्श :-

संस्कृत भाषा का महत्व योगिक साहित्य में ही नहीं अपितु संपूर्ण प्राचीन साहित्य में परिलक्षित प्राप्त होता है। संस्कृत भाषा की उपयोगिता वर्तमान समय में भी उतनी ही प्रतीत होती है जितनी कि प्राचीन समय में थी। संस्कृत साहित्य को समझने के लिए सबसे आवश्यक है कि संस्कृत को जन सामान्य की भाषा के रूप में व्यावहारिक जगत में प्रयोग किया जाए। योग विज्ञान में ना केवल योग का अध्ययन किया जाता है, बल्कि योग के अंतर्गत मानव शरीर रचना विज्ञान, मनोविज्ञान, शारीरिक शिक्षा और आहार विज्ञान आदि विषयों का भी वर्णन योग के प्राचीन ग्रंथों में प्राप्त होता है, जो की पूर्णत: संस्कृत भाषा में ही वर्णित मिलता है। योग की वैज्ञानिक अवधारणा के अंतर्गत पंचकोश, चक्र, कुंडलिनी और नाडियों आदि की अवधारणा भी मूल संस्कृत में ही प्राप्त होती है। संस्कृत भाषा के ज्ञान के बिना योग विज्ञान को यथार्थ रूप में समझना अत्यंत ही जटिल प्रतीत होता है, हालांकि संस्कृतज्ञयों ने यौगिक साहित्य पर अनुसंधान कार्य कर उन्हें सामान्य जनों तक अन्य भाषाओं जैसे हिंदी व अंग्रेजी आदि में अनुवाद किया है। लेकिन आज भी योग की विभिन्न विधाओं को समझने के लिए संस्कृत की नितांत आवश्यकता प्रतीत होती है।

निष्कर्ष :-

अतः स्पष्ट है कि संस्कृत के बिना योगिक साहित्य की ही नहीं अपितु संसार के समस्त प्राचीन साहित्य को समझना अत्यंत कठिन प्रतीत होता है भारतीय संस्कृति के साहित्य को समझने के लिए संस्कृत भाषा का अत्यंत

महत्वपूर्ण स्थान है इससे सभ्यता व संस्कृति दोनों का विकास होता है साथ ही नैतिक शिक्षा का सूत्रधार भी संस्कृत भाषा को ही माना जाता है। अतः कह सकते हैं कि संस्कृत भाषा का अमूल्य योगदान यौगिक साहित्य में स्पष्ट रूप से दिखाई पड़ता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

- शास्त्री, केशवलाल आचार्य: उपनिषत्संचयनम्-प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय खण्ड, चैखम्बा संस्कृत प्रतिष्ठान, दिल्ली, 2015
- दिगम्बर स्वामी एवं झा पीताम्बर: हठप्रदीपिका (स्वात्माराम कृत) कैवल्यधाम योग संस्थान लोनावाला पुणे, महाराष्ट्र, 2017
- भारती, परमहंस स्वामी अनंत: घेरण्ड संहिता, चैखम्भा ओरियन्टालिया, दिल्ली, 2013.
- सरस्वती, स्वामी निरंजनानंद, योगदर्शन (योग औपनिषदीय दृष्टिकोण) योग पब्लिकेशन्स ट्रस्ट, गंगादर्शन मुंगेर, बिहार, 1994
- उपाध्याय, आचार्य बलदेव, संस्कृत-वाङ्मय का बृहद् इतिहासः प्रथम-खण्ड वेद, उत्तर प्रदेश संस्कृत संस्थान, लखनऊ, 1997
- शर्मा, उमाशंकर, संस्कृत साहित्य का इतिहास, चैखम्भा भारती अकादमी, वाराणसी, 2016
- त्रिपाठी, रामसारग: संस्कृत साहित्य का इतिहास, चैखम्भा संस्कृत प्रतिष्ठान, दिल्ली, 2003
- सिन्हा, प्रसाद हरेन्द्र: भारतीय दर्शन की रूपरेखा, मोतीलाल बनारसीदास प्रकाशन, 1963